॥ श्रीहरिः ॥

श्री मथुरेश प्रीति पुष्पांजली

* भूमिका *

विनय सुधाकर की भूमिका में स्पष्ट निवेदन किया जा चुका है कि संसार सागर से उद्धार के लिये सब से श्रेष्ठ और सुगम उपाय शरणागति है और विनय के चौरासी पद प्रत्येक एक एक लक्ष योनि से छुटकारे का साधन हैं।

परन्तु शरणागतिः क्या वस्तु है के प्रकार की है और हर एक प्रकार की शरणागति का क्या क्या लक्षण और उदाहरण है इसके वर्णन की आवश्यकता है।

और इस बात के खोल देने की भी अति ही आवश्यकता है कि विनय पूर्वक गान शरणागति का अंग भी है या नहीं और है तो छै प्रकारों में से किसके अन्तर्गत है।

प्रथम जानने योग्य है कि नवधा भक्ति जो शास्त्रों में वर्णन की गई है उसमें अन्तिम भक्ति का नाम आत्म निवेदन है।

जब जीव अपने को प्रभु के अर्पण करके निश्चय कर लेता है कि वह प्रभु का हो चुका और सच्चे दिल से यह शब्द बोल देता है कि हे प्रभो मैं आपका हूं तो कहा जाता है कि वह प्रभु की शरण में आचुका—और उसको पाप पुण्य के बन्धन से छुटकारा मिलजाता है—यहां तक कि प्राणी मात्र से उसे अभय पद प्राप्त हो जाता है इसमें कोई सन्देह का स्थान नहीं है।

भगवान् श्री रामचन्द्र महाराज ने विभीषण शरणागति के अवसर पर येही आज्ञा श्रीमुख से की है वाल्मीक रामायण में यह वचन स्पष्ट लिखा है।

सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीत्य भियाचिते।
अभयं सर्व भूतेभ्यो ददाम्ये तद्व्रतंमम ॥

अर्थात् जो प्राणी मेरी शरण में आकर एक बार भी मुझ से कह देता है कि मैं आपका हूं—तो उसे सब भूतों (प्राणि मात्र) से मैं अभय कर देता हूं यह मेरा दृढ़ व्रत है।

सब प्राणधारियों में मनुष्य, असुर, और समस्त देवगण भी आ गये—तो यमराज भी उन्ही में अन्तर्गत हैं—अर्थात् प्रभु की शरण में आये हुए पर यम धर्मराज के नियम भी नहीं चलते प्राणी निर्भय हो जाता है।

भगवत् गीता में श्री अर्जुन के प्रति भगवान् श्री कृष्णचन्द्र महाराज ने फरमाया है।

सर्व धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वां सर्व पापेभ्यो मोक्ष यिष्यामि माशुच ॥

और भी मद्भागवत में भी श्रीकृष्ण महाराज ने उद्धव के प्रति आज्ञा की है कि:-

तस्मात्त्वमुद्धवो त्सृज्यनोदनां प्रतिनोदनाम् ।
प्रवृत्तंच निवृत्तंच श्रोतव्यं श्रुत मेवच ॥
मामेक मेव शरण मात्मानं सर्व देहिनाम् ।
याहिसर्वात्म भावेन मयास्था ह्यकुतोभयः ॥

अर्थ यही है कि धर्म अधर्म प्रवृति निवृत्ति के नियमों की कुछ भी परवा न करके जो जीव प्रभु की शरण में आ जावे तो प्रभु प्रतिज्ञा करते हैं कि उस प्राणी को पाप पुण्ड आदि कर्म बन्धन से मुक्ति मैं कर देता हूं फिर उसे किसी से भय और चिन्ता नहीं रह सकती वेद में शरणागति का यह मन्त्र है।

योब्रह्माणं विदधाति पूर्वं योवैवेदाँश्च प्रहिणोतितस्मै ॥
तंहदेवमात्म बुद्धि प्रसादं मुमुक्षुर्वै शरणमहं प्रपद्ये ॥

अर्थात् जिसने ब्रह्मा को रच के उसके प्रति वेदों का ज्ञान दिया और जो देव आत्मा और बुद्धि को आनन्द देने वाला है मैं मोक्ष की इच्छा रखने वाला उसी की शरण में आया हूं।

एक महानुभाव कहते हैं कि हे भगवन् आपके सिवाय किसी और देव की शरण में जाय ऐसा कौन पंडित और चतुर कहाने के योग्य है अर्थात् आपको छोड़कर दूसरे किसी की शरण में जाय वो पंडित और चतुर नहीं है मूर्ख है—क्योंकि आप में जैसे गुण हैं वह दूसरे किसी में भी दृष्टि गोचर नहीं होते—वे कौन से गुण हैं ?

(१) भक्त प्रियत्व अर्थात् भक्त आपको प्यारे और भक्तों को आप प्यारे हैं— यहां तक आपको भक्त प्यारे हैं कि एकादश में आपने उद्धव के प्रति कहा है कि मुझे न मेरा पुत्र ब्रह्मा ही प्यारा है न शंकर महादेव और न संकर्षण बलदाऊ भाई न साक्षात् लक्ष्मी और न अपनी आत्मा-जैसे कि मेरे भक्त मुझे प्यारे हैं।

(२) आप सत्य वक्ता और सत्य संकल्प हैं यहां तक कि आपने शिशुपाल की माता को यह वचन दे दिया था कि जब तक तेरा पुत्र ९९ गालियें मुझे देगा मैं उसे नहीं मारूंगा क्षमा कर दूंगा ऐसा ही युधिष्ठिर के यज्ञ में किया दूसरे को इतनी क्षमा और वचन के पालन की शक्ति कब हो सकती है।

(३) आप सुहृद् मित्र ऐसे हैं कि सुग्रीव से मित्रता करके यहां तक साथ दिया कि अपनी सर्व शक्तिमत्ता को बट्टा लगाकर भी आपने वालि को वृक्ष की ओट में से मारा—और अर्जुन के रथवान बने, सुदामा से कैसी मित्रता निभाई।

(४) आप कृतज्ञ ऐसे हैं कि थोड़े से उपकार को भी बड़ा मानते हैं-आपने हनुमानजी के प्रति कहा कि हे पवन पुत्र मैं तुम्हारे एक एक उपकार के बदले अपने प्राणों को न्योछावर करदूं तौ थोड़ा है बाकी उपकारों का बदला नहीं दे सकता तुम्हारा ऋणिया (कर्ज़दार) हो रहूंगा।

(५) जो तुमको भजे उसे सब कुछ देकर आप सर्वस्व दे देते हैं यहां तक कि अपनी

बुराई को भी परवाह नहीं करते—जैसा भीष्म भक्त के साथ किया कि अपनी प्रतिज्ञा भंग करके भक्त की प्रतिज्ञा पूरी करी।

कः पंडित स्त्वदपरं शरणंसमीयात् भक्त प्रियात्
ऋतगिरः सुहृदः कृतज्ञात् ॥ सर्वान् ददाति सुहृदे
भजतेऽभिकामा मात्मानमप्युपच यापचयौ नपश्यः

अब शरणागति के छै अंग वर्णन किये जाते हैं।

आनुकूल्स्य संकल्पः प्राति कूलस्य वर्जनम् ।
रक्षिष्यतीति विश्वासो गोप्तृत्व वर्णनं तथा ॥
आत्म निक्षेप कार्पण्यं षड् विधाशरणागतिः ॥

१—भगवत् के अनुकूल पदार्थों में रुचि २—प्रतिकूल वस्तु में त्याज्य बुद्धि ३—हमारी रक्षा प्रभु अवश्य करेंगे ऐसा दृढ़ विश्वास ४—प्रभु ने जिनकी रक्षा की है उसका वर्णन ५—आत्मा का प्रभु के अर्पण कर देना ६—दीनता और विनय पूर्वक प्रभु से प्रार्थना। बस यह छै अंग शरणागत के हैं इन को एक राम भक्त ने दोहों में इस प्रकार कहा है:—

(१) नाम रूप लीला सुरति, धाम वास सत्संग।
स्वांत सलिल श्रीराम मन, चातक प्रीत अभंग ॥

(२) मद कुसंग परदार धन, द्रोहमान जनि भूल।
धर्म राम प्रति कूल यह, अमी त्याग विष तूल ॥

(३) अम्बरीष प्रहलाद ध्रुव, गज द्रोपदि कपिनाथ।
भये रक्षक इनके तथा, ममहू श्री रघुनाथ ॥

(४) केवट कपिकृत सख्यता, शबरी गीध पषान।
सुगति दीन रघुनाथ अस, कृपा सिन्धु को आन ॥

(५) दान दया तप तीर्थ व्रत, संयम नेम अचार।
मन वच कायक कर्म सह, आत्म राम पदवार ॥

(६) कायर क्रूर कपूत खल, लम्पट मंद लबार।
नीच पातकी मूढ मैं लीजे नाथ उबार ॥

इस में छटी प्रकार जो दीनता है उसी का नाम विनय है और इसी से प्रभु अति प्रसन्न होते हैं—सो इस पुस्तक में प्रेम पूर्वक विनय के गीत लिखे गये हैं इस कारण से इसका नाम प्रेम गीतावली समझना चाहिये।

निवेदक—हरिदासानुदास,

मथुराप्रसाद।

रचियता मुंशी मथुराप्रसाद जी सरदारे अपील
जज अपील कोर्ट, जयपुर सिटी।

I Jumna Printing Works Muttra.

॥ श्रीहरिः ॥
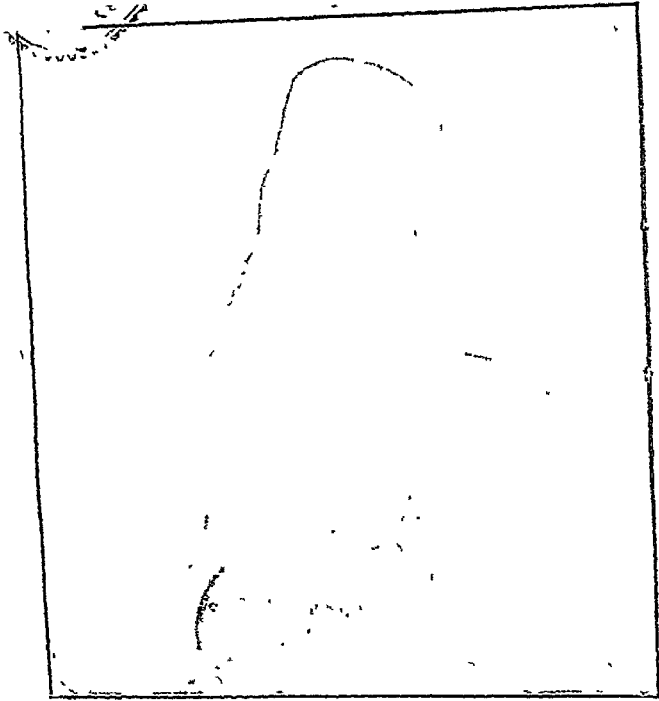
विनय का (पद)

(१) हे दयामय तेरे नामों का न वारा पार है ।
मेरे तौ तेरा दयामय नाम ही आधार है ॥ १ ॥
भारी बोझल सर पै गठरी है गुनाहों की मेरे ।
चलने दे इक भी क़दम हरगिज़ न ऐसा बार है ॥ २ ॥
आगे भवसागर है तरना फिर अंधेरी रात है ।
सूझता कुछ भी नहीं मन बुद्धि सब बेकार है ॥ ३ ॥
पास कोई भी नहीं जिससे करूं फ़रियाद अब ।
मांगिये किससे मदद कोई न अपना यार है ॥ ४ ॥
डूबते को एक तिनके का सहारा ही बहुत ।
है यही आधार स्वामी तू दया भंडार है ॥ ५ ॥
दास अपने को मुसीबत में परेशां देखकर ।
चैन से सोवै न स्वामी जो दया आगार है॥ ६ ॥
गर मेरे आमालनामे की तरफ़ होगी नज़र ।
तौ नहीं इस दास का होना कभी उद्धार है ॥ ७ ॥
देख अपने उस पतित पावन दयालू नाथ को ।
बांध लोगे जो कमर तो कुछ नहीं दुश्वार है ॥ ८ ॥
कर दया अब देर करने का समय हरगिज़ नहीं ।
डूबने को यह पुरानी नाव बस तैयार है ॥ ९ ॥
हर तरफ़ से खींच निज चरणों में मेरा मन लगा ।
बस इसी में जल्द होना मेरा बेड़ा पार है ॥ १० ॥

वर युगल चरणों की भक्ती की दया करदे मुझे ।
तुझसा तिरलोकी में कोई भी नहीं दातार है ॥ ११ ॥
पद कमल से मेरा मन भौंरा टलै पल भर नहीं ।
दान येही पाके मथुरा दास बस बलिहार है ॥ १२ ॥

---o---

(पद)

(२) पतितों के भी उद्धार की है बात तुम्हारी--है कीरत भारी ॥
वो नाथ बिसरता न कहीं कृष्ण बिहारी--जब हो मेरी बारी ॥
जुग बीत गये आपने तारे वो अधम थे--रुतबे में जो कम थे ।
हम जैसों के तारेहि सुजस हो बड़ा भारी-असलेहु विचारी ॥
इक बार कहै तेरी शरन हूं कोई मुख से--हो मुक्त वो दुख ।
मैं कह चुका साबौर शरन आया तिहारी--प्रणलेहु संभारी ॥
मन बुद्धि के प्रेरक हो तुम्ही वेद बखानै--पर भेद न जानै ।
किस न्याय से फिर नाथ गिनो चूक हमारी--शंका ये दो टारी ॥
मशहूर हुआ जग में ये जनदास तुम्हारी-दूजा न सहारा ।
बिगड़े जो मेरी किसकी हंसी होगी मुरारी-रहे क्योंकर सदारी॥
जप यज्ञ न तप दान दया धर्म का पालक-नादान हूँ बालक ।
मथुरेश हिये आस है केवल तेरी धारी- तुम जानो तुम्हारी ॥

---o---

(पद)

(३) क्यों लगाई देर प्रभुजी काहे कीनी देर ॥

दीन दुर्बल दुखित जिय मम रह्यो कबसों टेर ॥
१ काम क्रोध मदादि रिपु अलि लियो मोकों घेर ॥
तुम में लगन न देत मनकों करत बहु विध छेर ॥ प्र०
२ ईश जीव सखा सनातन कहे वेदन टेर ॥
विपत में लख मित्रकों नहिं करत कोउ अबेर ॥ प्र०
३ चैन पावत स्वामि कब दासै विपत में गेर ॥
सरे किस विध किये आलस नाथ मेरी बेर ॥ प्र०
४ घोर पातकि आपतारे अजामिल से हेर ॥
मथुरादास की ओर से गये क्यों प्रभु मुख फेर ॥ प्र०

———o———

(पनिहारी की चाल में विनय का)

(पद)

(२) लीनी शरण हम आपकी दुख टारौ जी वेग करौ उद्धार—माधोजी ॥
हमरी चूक चित लाओना—दया धारौ जी करुणा के भंडार—माधोजी ॥
तुमरे दरस की लालसा हिये भारी जी दर्शन देहु पधार—माधोजी ॥
झांकी तिहारी मन भावनी—गिरधारी जी—शोभा अपरम्पार—माधोजी ॥
भई सकल व्रज नागरी—मतवारी जी—रूप अनूप निहार—माधोजी ॥

प्रेम भक्तिवर दीजिये–बनवारी जी–तुम हो बड़े दातार–माधौजी ॥
मथुरादास तेरे रूप पै–बलिहारी जी–जीवन प्राण अधार–माधौजी॥

———o———

(अटारियों पै गिरचोरी कबूतर आधीरात–इस चाल में)

(पद)

(५) संभारियों जी अन्त समैया प्रभुधाय ।
तुम सो नाहिं कोऊ दीन बन्धु यदुराय ॥
करतूतें मेरी दीजो हिये से बिसराय ।
गिनके निज अनुचर लीजे नाथ अपनाय ॥
तुम्हरे दर्शन कों जियरा रह्यो अकुलाय ।
कृपा कर दीजो राधे रानी संग लाय ॥
वह सांवल गोरी जोरी दृगन में आय ।
नानिक सै कबहू जिह लख मदन लजाय ॥
जब तन कों तज के जीव ये बाहर जाय ।
पद कंज युगल में लपक रहै लपटाय ॥
मन मोहन प्यारे मथुरा के नाथ कहाय ।
मत कीजो देरी दीजिये वर हरषाय ॥

(" बस में होते आये भगवान् भगत के." इस तर्ज़ पर)

(भैरवी)

(६) हरजा हाज़िर पाये गोविन्द विपत में ॥

१ सुरपति कोप कियो व्रज में जब—उठ रक्षा कीनी नटवर तब—
गिरवर धर कहलाये—गोविन्द विपत में ॥

२ कालि नाग जब जमुना घेरी—जीवन का भई विपत घनेरी—
नाग नाथ प्रभु लाये ॥ गोविन्द०—

३ भीर परी जब पांडु सुतन में—उनकी विजय कराई रन में—
खुद रथवान कहाये ॥ गोविन्द०—

४ दीन सुदामा के दुख टारे—नैनन जल से चरन पर वारे—
कंचन महल चुनाये ॥ गोविन्द०—

५ नामदेव घर छान छवादी—हित कबीर के बालद लादी—
नरसी करज चुकाये--गोविन्द०—

६ भीर परी प्रहलाद पै जब जब—रक्षा करी धाय प्रभु तब तब
खम्ब फार प्रगटाये—गोविन्द० ॥

७ कंस मार जन दुख हर लीनो—मथुरावासिन को सुख दीनो
मथुराधीश कहाये—गोविन्द० ॥

———o———

(इस की तर्ज़ पर दूसरा)

(पद)

(७) दुःख हरण सुखदाई श्री कृष्ण चरण है ॥

१ जिन से पतित पावनी अंगा–करत सकल पापन को भंगा-
प्रघटी गंगा माई ॥ श्री कृष्ण० ॥
२ गज की टेर सुनी करुणाकर–विकल भये तज धीरज नटवर-
धाये न देर लगाई ॥ श्री कृष्ण० ॥
३ द्रौपदि कों दुःशासन लायो–नंगी करके चहत नचायो-
धाय के लाज रखाई ॥ श्री कृष्ण० ॥
४ रही पाषान अहल्या नारी–पद रज पर सत भई सुखारी-
महिमा त्रिभुवन छाई ॥ श्री कृष्ण० ॥
५ नृत्य कियो काली फन फन पै–दया करी निज भक्त जनन पै-
ध्यावत मुनि समुदाई ॥ श्री कृष्ण० ॥
६ यमला अर्जुन मुक्ति करन हित--घुटवन चले धार करुणा चित-
दामहु उदर बंधाई ॥ श्री कृष्ण० ॥
७ भीषम जू की टेक निभाई–भक्त काज निज प्रण विसाराई-
भक्त की बात बढाई ॥ श्री कृष्ण० ॥
८ पद पंकज अज शिव उरधारे–सोई जीवन प्राण हमारे-
मथुरा यहि निधि पाई ॥ श्री कृष्ण० ॥

———o———

(पद)

(८) १ हे दीनबंधु तुमको किस भांत मैं रिझाऊं ।
अवगुण की खान होके सद्गुण कहां से लाऊं ॥
२ हारे हज़ार मुख से गुण गाते शेशजी भी ।
मैं इक ज़ुबां से क्योंकर महिमा तुम्हारी गाऊं ॥

३ नहीं बल न बुद्धि विद्या शुभ गुण है कुछ भी मुझ में ।
अपराधों से मलिन मुख क्यों कर तुम्हें दिखाऊं ॥
४ चिरकाल से पड़ा है ग़फ़लत में जीव नादां ।
बेचेत मोहवश है क्योंकर इसे जगाऊं ॥
५ तुमसा दयाल कोई पाया नहीं जहां में ।
तज के चरण तुम्हारे अब किस के पास जाऊं ॥
६ हो दीनबंधु तुम ही करुणा के सिंधु तुम ही ।
होकर अनाथ किसको नाथ अपना मैं बनाऊं ॥
७ निर्गुण अरूप अनुपम सुन तुमको डर रहा हूं ।
क्योंकर तुम्हारे चिन्तन में अपना मन लगाऊं ॥
८ भक्तों के हेत तुमको तन धारते सुना है ।
हूं भक्ति हीन क्योंकर हक़ अपना मैं जताऊं ॥
९ अजिज़ मैं हूं सरासर मथुरापती मनोहर ।
फ़रमाइये मैं क्योंकर अपना तुम्हें बनाऊं ॥

——o——

(पद)

(६) १ तुमसा दयाल कोई हमने कहीं न पाया ।
मतलब का दोस्त पाया जिस जिस को आज़माया ॥
२ की द्रोपदी की रक्षा कुछ भी न पांच पति ने ।
तुमने ही नाथ फ़ौरन चीर उसका आ बढाया ॥
३ गजराज को कुटुम्बी सब छोड़ छोड़ भागे ।
वो कौन था कि जिसने प्राण उसका आ बचाया ॥

४ भाई ने लात मारी आया शरन विभीषण ।
रिपु भ्रात को भी तुमने उठ छाती से लगाया ॥
५ क्या की कमी पिता ने प्रह्लाद पुत्र बध में ।
वो कौन था सितूं से जो शेर बन के आया ॥
६ बालक धुरू को घर से बाहिर किया पिता ने ।
करक अचल तुम्ही ने की उस पै छत्र छाया ॥
७ वर्णन करूं कहां तक प्रभुता प्रभू तुम्हारी ।
गुन सुन तुम्हारे हाथों विन मोल हूं विकाया ॥
८ अब तारो या न तारो भूलो न टेक अपनी ।
मथुरेश जान लीजै हूं आपका कहाया ॥

(पद)

(१०) नाथ चरणों से तुम्हारे मन जुदा मेरा न हो । ×
कोई पल ऐसा न हो जिसमें मनन तेरा न हो ॥
हो पतित पावन तुम्हारा नाम हर दम कंठ में ।
ग़ैर का हिरदे कमल में तुम सिवा डेरा नहो ॥
प्रेम की मस्ती में सूझे कुछ नहीं तेरे सिवा ।
जीना है बेकार गर दर्शन पिया तेरा न हो ।
हर तरफ़ हर चीज़ में आवे नज़र जलवा तेरा ।
दिल रहे रौशन कभी माया का अंधेरा नहो ॥
तुझसे हित हो तुझमें चित हो नित लगन बढती रहे ।
जगके राग और द्वेष का दिल में कभी फेरा न हो ॥

आप जिस जिस जापे जब जब हों प्रगट भक्तों के काज ।
हो नहीं ऐसा कहीं चरणों में यह चेरा नहो ॥
तुच्छ मथुरा दास को मथुरेश ने अपना लिया ।
है असंभव दुनिया में जस तेरा बहुतेरा न हो ॥

—o—

(पद)

(११) ज़रा इधर भी करम की निगाह हो जाये ।
तौ जग में तेरी प्रभु वाह वाह हो जाये ॥
मिला न होगा मिलैगा न कोई मुझसा अधम ।
कि जिसके पापों से दफ़्तर सियाह होजाये ॥
तपा विरह में ये दिल धुल गया भी अश्कों से ।
ज़रूर है कि तेरा सैरगाह हो जाये ॥
तलब में कैसा मज़ा है हो तुमको तब मालूम ।
तुम्हारे दिल में अगर मेरी चाह हो जाये ॥
रहे न ख्वाब में भी फ़िक्र दीनो दुनिया की ।
जिसे तुम्हारे चरन की पनाह हो जाये ॥
हज़ारों दिल से फ़िदा हों तेरी अदाओं पर ।
जिधर खड़ा तू हसीनों का शाह हो जाये ॥
इसी क़दर है मेरी आरज़ू शहे खूबाँ ।
वो बांकी झांकी मुझे गाह गाह हो जाये ॥
तुम्हारा नाम है मथुरेश जो पतित पावन ।
वो तब सफल हो जो मेरा निबाह हो जायें ॥

ग़ज़ल

(१२) छबीले छैल हमारी भी कुछ ख़बर लैना ।
कभी कभी तो इधर की भी याद कर लेना ॥
न ऐसा वैसा पतित गिनियो मुझको साधारन ।
मेरे उद्धार को मज़बूत कस कमर लेना ॥ छबी०
हमारे हाथ ही क्या है करैं तो कौन उपाय ।
बस इतना बस है कि नैनों में नीर भर लेना ॥ छबी०
जगत को मोह लिया जिसके शब्द ने मोहन ।
मधुर वो मुरली ज़रा तो अधर पै धर लेना ॥ छबी०
हमारे क़त्ल को काफ़ी नहीं है तीरे नज़र ।
कटारी मंद हसन की भी तेज़ करलेना ॥ छबी०
तेरी विरह में अगर तन को मेरे प्राण तजै ।
तो उस समय तो अवश आके अंक भर लेना ॥ छबी०
मरा वो प्रेमी हुई श्याम को न कुछ परवाह ।
कहीं कलंक यह प्रीतम न अपने सर लेना ॥ छबी०
अटल हो प्रेम दरस देके वर ये दो मथुरेश ।
न हम हैं चाहते कुछ तुम से और वर लेना ॥ छबी०

ग़ज़ल

(१३) श्याम बिन दिन रैन हमको पल भर भी कल आती नहीं ॥
आस में दर्शन के अटकी जान भी जाती नहीं ॥

जैसे दीपक पर पतंगे चंद्र बिन जैसे चकोर ।
रस के सागर श्याम बिन हम मीन, सुख पाती नहीं ॥
स्वांत बिन्दू की तलब में जैसे चातक बेक़रार ।
त्यों विरह घनश्याम की हमसे सही जाती नहीं ॥
जो नहीं घायल हुआ क्या जाने वो घायल की पीर ।
ज़ख्म पर छिड़के नमक कुछ भी दया आती नहीं ॥
मन हमारा हर लिया पीतम ने दे दे कर वचन ।
मुंह छिपा बैठे वो क्या विश्वास के घाती नहीं ॥
ग्वाल थे अब जा बने मथुरा में मथुरानाथ वो ।
क्या वो माखन चोरियों की शान, याद आती नहीं ॥

———o———

तथा

(१४) मन मेरा हरके निडर छैल वो घर बैठ गया ।
मांगने पर भी बदल आंख मुकर बैठ गया ॥
है ग़जब सोहनी मन मोहनी छब मोहन की ।
देखी जिसने वोही सुध बुध को बिसर बैठ गया ॥
दूर जाना कमर कस के सफ़र में जिसको ।
देख छब हो के फ़िदा खोल कमर बैठ गया ॥
वेद पचहारे थके खोज में ब्रह्मादिक देव ।
मैं पता कैसे लगाऊं वो किधर बैठ गया ॥
प्रेम से भक्तों के आधीन वो होता है ज़रूर ।
जिस तरफ़ देखी लगन जाके ऊधर बैठ गया ॥

सच्चे आशिक़ की नज़र होती है फौरन ही कबूल ।
क़त्ल होने पर भी ले हाथ में सर बैठ गया ॥
आंखों में सुरमा लगाने की ज़रूरत न रही ।
आके वो जादू नज़र श्याम सुघर बैठ गया ॥
खूब है जान वो जो मथुरेश पै कुर्बान हुई ।
मौत का ग़म न रहा होके अमर बैठ गया ॥

---o---

ग़ज़ल ।

(१५) हम उन की चाह में जीवन बिताये बैठे हैं ।
वो और ही से सनम लौ लगाये बैठे हैं ॥
दो अपने दिल में मेरे दिलको भी जगह सरकार ।
ये सुन के बोले हमीं दिल गुमाये बैठे हैं ॥
हमारे शिकवे शिकायत की उनको क्या परवाह ।
हज़ारों सख्त मुसीबत में आये बैठे हैं ॥
निरखली जिसने वो मोहन की मोहनी मूरत ।
बना वो मजनू ये हम आज़माय बैठे हैं ॥
पड़ी जो कान की बंसी की तान कानों में ।
लुटे हुओं की सी सूरत बनाये बैठे हैं ॥
रही न दीन की पर्वा न कुछ भी दुनिया की ।
शराबे इश्क़ को मुंह से लगाये बैठे हैं ॥

कभी तो हम पै करेंगे अवश कृपा मथुरेश ।
इसी उम्मेद में आसन जमाये बैठे हैं ॥

---o---

(पद)

(१६) बांकी अदा वो श्याम की है मेरे मन बसी-
चित चोर उसकी जादु भरी मंद हे हंसी ॥
चितवन में उसके अमृत विष दोनों हैं भरे-
जीवन मरन की डोर हमारी वहीं फंसी ॥
मारे है जिसकी तान सुरीली हियेमें वान-
किस शानसे वो वंसी है मोहन अधरलसी ॥
त्रिलोकिमें है कौन जो मोहित नहो निहार-
छव पर मदन निसार है लख दंग उर्वसी ॥
कुर्वान प्रेमी उस पै हैं वो प्रेम के आधीन-
वस में सब उसके उसको है प्रेमी से बेबसी ॥
पर्वाह क्या है मुक्ति की या भुक्ति की हमें-
सूरत सलौनी श्याम की जब मन में आ धसी ॥
मथुरेश प्रेम रस के भिकारी वो धन्य हैं-
रिधसिद्धि की न चाह रही तनकी सुध नसी ॥

---o---

(पद) (जयपुरी भाषा में)

(१७) राधे प्यारी जी देडारो प्रेम सुधा की बूंदरी ॥

श्यामां म्हांने भी बख़्शाओ प्रेम सुधा की बूंदरी ॥

१ म्हे छां दुखिया दीन गंवार—थे छो करुणा की भंडार—
मांगां थांसूं जी दातार—प्रेम सुधा की बूंदरी ॥ राधे० ॥

२ दीजै प्रीतम ने समझाय—म्हांने देवे दर्शन आय—
प्यावै रस के मांहि छकाय—प्रेम सुधा की बूंदरी ॥

३ छक छक पिया शुकमनी व्यास—गोपीजन नारद हरिदास—
मीरां पी भई दास खास—प्रेम सुधा की बूंदरी ॥

४ छाक्या नामा नानक वीर—दादू नरसी दास कबीर—
सन्तापी पायो बलवीर—प्रेम सुधा की बूंदरी ॥

५ राखां थांका ही म्हे आस—दूजा को ना छे विश्वास—
देके मेटो दर्शन प्यास—प्रेम सुधा की बूंदरी ॥

६ शरणागत की थांने लाज—सुन सरकार गरीबनवाज—
म्हां को करदो पूरण काज—प्रेम सुधा की बूंदरी ॥

७ मथुरा विनय करै कर जोर-स्वामिन स्वामी नवलकिशोर—
बख़्शो लख बेगी इत ओर—प्रेम०—

—o—

गज़ल।

(१८) ना मेरी नाथ के चरणों में रती पाव रती।
होगी इस दीन की सरकार कहो कौन गती ॥
कोई साधन न बना माया के फंदे में फंसा।
लोभ कामादि के बस होगया बिसरी सुमती ॥

अपनी कर्तूतों को कर याद महा लज्जित हूं ।
भाखूं किस मुख से प्रभो कीजिये मेरी सुगती ॥
भक्ति का लेश नहीं आपका जन कहलाया ।
लोग दिखलाने को की कुछभी अगर की विनती ॥
इस अवस्था में यही सोच है स्वामी भारी ।
मुझको बिसराये कहो होगी प्रभू किसकी क्षती ॥
अपना जस रखने की खातिर ही दया मुझपै करौ ।
दे दरश करदो सफल नाम जो है दीनपती ॥
हर घड़ी ध्यान रहै तुमको ही देखूं सब में ।
प्यार सबसे हो कपट छल से विमल होय मती ॥
बख्श दो प्रेमका किनका बढे दिन दूनी लगन ।
करिये स्वीकार श्रीमथुरेश यह जनकी प्रणती ॥

---o---
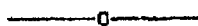
बधाई श्री रघुनन्दन महाराज की (हमारी कही मानोजी राजाजी इस तर्ज पर)

(१९) हमारे मन भायौ जी कौशल्या नन्द ।
बधाई लेके चलिये दशरथ द्वार ॥ हमारे०
बिसारी सारी सुध बुध रूप निहार ।
हिये में भारी छायो है जी परमानन्द ॥ हमारे०
अवध पुरी घर २ मंगल चार ।
प्रगट भये धन २ रघुकुल चन्द ॥ हमारे०
चैत्र सुदी नौमी धन तिथि वार ।
जनम लियो जग में आनन्द कन्द ॥ हमारे०

करत ठारे चहुंदिस जैजै कार।
सुमन बरसावें नभतैं सुर वृन्द ॥ हमारे०
सलौनी छवि मन की मोहन हार।
निरख बल जैये याकी मुसिकान मन्द॥ हमारे०
मगन दिये मथुरा तन मन वार।
छुटै ना अब पर्यो नेह दृढ़ फन्द॥ हमारे०

—o—

(श्री जानकी जी की बधाई) पनिहारी की चाल में।

(२०) धन्य २ श्री जानकी मिथिलेश लली,
वश कीने सरकार—राघौजी—
१ जन्मत ही तिहु लोक में भई रंग रती—
अति रीझे रिझवार—राघौजी
२ हरषे सुर मुनि सन्त सुन सब भांत भली—
करदीनी करतार—राघौजी
३ सुन सिया जन्म उतावली सज साज चली—
देन बधाई नार—राघौजी
४ खिलत लली छवि के लखे मन प्रेमकली—
मगन मोह उरधार—राघौजी
५ साल गिरह सिया की भली रचना रचली—
राज रहे दरबार—राघौजी
६ दम्पति के रस नेह तैं—रति बेल फली—
आनन्द लियो अपार—राघौजी०

७ छके परस्पर प्रीत रस–दृग सैन चली–
मोहे रसिक उदार–राघौजी
८ युगल मंद मुसिकान पै–बलजात अली–
मथुरा नमत निहार–राघौजी

———o———

(पद)

(राग हरि प्रिया तिताला)

(२१) दरशन दे नित गिरिधर मन हर ।
तुम सम नहिं कोउ सुजन सुखद वर ॥ दर्शन दे०–
चरण शरण मोंहि राख विपत हर ।
सुरपति दमन कियो गिरि कर धर ॥ दर्शन दे०–
सहजहि राख लियो ब्रज हितकर ।
सुजस छयो तव यदुवर घर घर ॥ दर्शन दे०–
कब देखूं तोंहि मोहन दृग भर ।
मथुरापति यह विनय हृदय धर ॥ दर्शन दे०–

———o———

तिताला ।

(रागाधिकारी हरिकाम्बोजी)

(२२) धन्य गिरधर प्यारे–महिमा अपार तुम्हरी सांवरे ॥
तुमही ब्रजके आनंद दाता–तोरे बिन कछु हमें न भाता ॥

तड़पत तुम बिन छिनि छिनि निस दिन ।
माधो दुखहर सुखंकर प्रियवर छबिधर धन धन ॥
मथुरापति प्रभु तूही सब विधि त्रिलोक त्राता ॥ धन्य०

———०———

(पद—विहाग)

(२३) हरि तुम परम दया की खान—
दीनन दुख भंजन प्रण तुम्हरो गावत वेद पुरान ॥ हरि तुम०
नेम धरम जपतप व्रत संजम योग यज्ञ बहु दान ।
मिलत नांहि काहू साधन तें प्रेम विवश भगवान ॥ हरि तुम०
दुराचाररत कैसोहु प्राणी लघुमति अतिही अजान ।
जो आयो तव चरण शरण हरि भयो तासु कल्यान ॥ हरि०
भिलनी अधम विदुर तिय जड़ मति जानत ज्ञान न ध्यान ।
बदरी फल कदली फल छिलका पायो स्वाद बखान ॥ हरि०
तुमरे दरस हेतु जिय तरसत भावत खान न पान ।
प्यारे लागत तुमही प्रीतम मम जीवन धन प्रान ॥ हरि०
विरह जराय छारकर डारै तब कस होय मिलान ।
श्री बल्लभ मथुरेश बेग मिल प्राण दान दो आन ॥ हरि०

———०———

(पद)

(राग केदारा)

(२४) जयजय श्रीनाथ प्रभु देव दमन स्वामी ।

जन रंजन भव भंजन भक्त वसल नामी ॥ जयजय०
तुम सम करुणा निधान त्रिभुवन कोउ नाहि आन ।
दीन बन्धु दयावान सुख निधि परधामी ॥ जय०
जन अवगुन लखत नांहि सुर नर मुनि जस सरांहि ।
तारे बहु पलक मांहि पतित कुपथ गामी ॥ जय०
सात दिवस अंगुली पर धारो गिरिधन गिरधर ।
सुन्दर वर घन नटवर सुखकर निश्कामी ॥ जय०
दर्शन दे हरत पीर आरति हर दया वीर ।
धारे दृग प्रेमनीर जन हिय विसरामी ॥ जय०
वल्लभ मम प्राणन के रक्षक जन तन मन के ।
मथुरा पति धन्य धन्य युगल पद नमामी ॥ जय०

ग़ज़ल

(२५) मैं तो लीनी हरि तुमरी शरन तू उबारियो न उबारियो ।
प्रभु आ गहे तुमरे चरण चाहे तारियो न तारियो ॥
न कहूं कि मुक्तिहि दो मुझे नहिं जुक्ति मुक्ति चहैं मुझे ।
मेरी याद प्यारे जी दिलसे तुम न बिसारियो न बिसारियो ॥
मैं तुम्हरी माया के बस में जी तुम्हें भूल जाऊं अजब नहीं ।
मुझे भूले तुमको बनै नहीं ये विचारियो जी विचारियो ॥
मथुरा के स्वामी कहाते हो तो भी दास पास न आते हो ।
इसि जग हंसाई मिटाने कोहि पधारियो जी पधारियो ॥
मैं तो लीनी हरि तुम्हरी शरन०

(पद)

(२६) सन्त जन परम कृपा की खान ।
पलमें करत निहाल जीवकों धन धन दयानिधान ॥ सन्त०
माया मोह जाल में जकड़े जो जन निपट अजान ।
मुक्त होत वे सन्त कृपा से पावत पद निर्वान ॥ सन्त०
हरिसों अधिक सन्त हरि जन हैं ऐसो निश्चय जान ।
हरिसों मुक्ति मिलै हरि जन सों मिलैं स्वयं भगवान ॥ सन्त०
श्री मथुरेश भक्ति के बस हैं गावत वेद पुरान ।
हरिपद कमल भक्त जनद्वारा मिलत होत दुख हान ॥ सन्त०

—o—

(पद)

(राग सोहनी)

(२७) धन्य धन त्रिभुवन धनी तव महिमा अपरम्पार है ॥
गुण तुम्हारे कौन वरणै वेद मानी हार है ॥ धन्य०
पतित को पावन बनाते तुमको लगती न वार है ।
आपही कि कृपा से जन का होता बेड़ा पार है ॥
अजामिल से घोर पापी तरे नाम आधार पर ।
व्याध शवरी से अधमहू पायो सुख भंडार है ॥ धन्य०
सारे साधन आपके अनुराग बिन बेकार हैं ।
करते श्री मथुरेश ही पतितों का उद्धार हैं ॥

(पद)

(२८) हरी को छोड़ दुनिया में जो मन अपना लगाता है ॥
तो खोकर रत्न का भंडार खाली हाथ जाता है ॥
कमीनी है ये दुनिया सिर्फ़ धोके की है ये टट्टी ।
जो इससे दूर हटता वोही परमानन्द पाता है ॥
कहां होगा ये सब नामो निशा यह तन कहां होगा ।
हमेशा वो रहै क़ायम खुदी को जो मिटाता है ॥
लगाना चाहिये मथुरेश में दिल तज के माया को ।
विमुख उस से जो हो प्राणी वृथा जीवन बिताता है ॥

(पद)

(श्रीराधका जी से विनय)

(२९) सुनहु विनय मम स्वामिनि राधे–
गुण अनूप छबि रूप अगाधे ॥ सुनहु०
निष्फल सकल जतन सुखके हित–
चैन न बिन तव पद आराधे । सुनहु०
दयावन्त तुम सम नहिं कोऊ–
मेटहु तुरत तुमहिं जन व्याधे ॥ सुनहु०
अधम उद्धारिणि विपत विदारिणि–
सुखकारिणि अघहारिणि राधे । सुनहु०
अवगुन खान अजान कुजन मैं–

थकत न करत नित्य अपराधे ॥ सुनहु०

हो निचिन्त इक तोरे भरोसे--

देवी देव कोउ नहिं साधे ॥ सुनहु०

युगल दरसहित तरस घनेरी--धरन सकत मन छिनहु समाधे ॥सु०

श्री मथुरेश प्राण जीवन धन--मिल मेटहु प्रिये सकल उपा धे ॥सु०

(कसूंबी की चाल में)

(पद)

(३०)—पाऊं मैं कैसे हो कैसे दरस रसिया को--

बिन देखे नहिं चैन--कैसे दरस रसिया को ॥

बांकी वो झांका वो झांकी सदन शोभाकी-बसरही हियमाँहि ॥कैसे

सांवरो सलोनो वो नन्दजी को छोना-गयो नैनन सामाय ॥कैसे

मथुरा को स्वामी वो स्वामी पूरण रसधामी- लख मदन लजाय ॥ कै-

[रसिया की चाल में]

(पद)

(३१)—धन धन यह दिन सब से नीको--धन २ यह०

जाग उठे धन भाग हमारे--मिल्योदरस गिरधरजी को ॥ धन२

ब्रज जन को दुख भंजन हारो-प्यारो यह तो सबही को ॥ धन०

सांवरि सूरत माधुरी मूरत--दुखहारी सुत नंदजी को ॥ धन०

मथुरा या छबि पै बलिहारी–प्राण पिया राधाजी को ॥ धन०

———o———

(पद)

(श्री राधाजी और कृष्णजी के प्रथम ही चौनज़र होने के वर्णन में)

(३२) चौनज़र कैसे युगलवर हैं लुभाते मनको ।
त्यागी सुध तननें उधर सुधनें विसारा तनको ॥
रूप माधुर्य युगल छव पै परस्पर रीझे ।
रत्न भंडार मिला मानों किसी निर्धन को ॥
जुट रहे प्रेम अखाड़े में हैं चारों दृग मल्ल ।
नभ में एकत्र हुई देव वधू दर्शन को ॥
दोऊ मुख चन्द्र चकोरी हैं परस्पर अंखियां ।
ये दो मुख पद्म हैं सुखदाई अली लोचन को ॥
धन्य मथुरेश रसिक रसनिधि धन धन राधे ।
धन्य वो जिसने हिये धार लिया इस धन को ॥

———o———

(पद)

(श्री कृष्णजी की विरह में राधेजी का गाना)

(३३) हाय मन मोहन पियाने कैसो टोना कर दियो ।
प्यारी चितवन मंद मुसिकान मेरो सर्वस हर लियो ॥ हाय०
एक पलहू कल नहीं ज्यों मीन जल के बिन दुखी ।

चन्द्र बिन जैसे चकोरी लज़ैं थर थर थर हियो ॥ हाय०
पीव बिन फीको जगत लागै भवन बनके समान ।
डस लियो कारे ने मन बस तन सदन ऊजर कियो ॥ हाय०
पीर घायल की कहा जानै न लागै जाके घाव ।
मर्म जानै वोही जानै प्रेम प्यालो भर पियो ॥ हाय०
खाय के तीखी कटारी प्रेम की जीनों कठिन ।
मर मिटे भूलेहु जो पथ प्रेम में पग धर दियो ॥ हाय०
सांवरे मथुरेश बिन छिनहू ये जीवन है वृथा ।
प्राण तन से जाओ जुग २ वो पिया मन हर जियो ॥ हाय०

———o———

(पद)

(३४) जाके मुख देखन कों त्याग सर्व लोक सुख नीलकंठ
बौरे से फिरत विष खायके ।
घोर तप साधें ताजि लौकिक उपाधें सब सिद्ध मुनि
देव नाग ध्यावें सिर नायके ॥
पूतना शकट वक धेनुक से दैत्य हते कालिन्दी को
कष्ट मेट्यो काली नाथ लायके ।
दावानल पान कियो आंगुरी पै गिरि धर्यो थाके
चार वेद मथुरेश जस गायके ॥

———o———

तथा ।

(३५) जाहि निज भक्तन से प्यारौ और कोऊ नांहिं—
अज शिव दाऊ वाम जाहि नांहि प्यारी है ।
भक्तन के पाछे डोलै हित की ही वानी बोलै—
प्रेम के अधीन नट नागर विहारी है ॥ जाहि०
गोपिन की मन भाई नाना विध पूरी करै—
छेड़ छाड़ वाकी गोपीजन सुखकारी है ।
ऐसे मथुरेश कीजो महिमा न जाने सो तौ—
पशु के समान मूढ़ वृथा देह धारी है ॥ जाहि०

———o———

पद ।
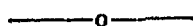
(३६) गिरधारी वनवारी मोरे मन भायोरी ॥
बांकी सुरत रसीली प्यारी मूरत छबीली ।
झांकी अति ही रंगीली मनड़ो लुभायोरी ॥ गिर०
वो है जन सुखदाई प्यारो विपति सहाई ।
धन वाकी प्रभुताई जग जस छायोरी ॥ गिर०
चितवन प्यारी २ सज धज वाकी न्यारी ।
मोही सारी ब्रजनारी रस बरसायोरी ॥ गिर०
भक्ति वस रस धामी अति सगुण सुनामी ।
धन मथुरा को स्वामी जाके हिये आयोरी ॥ गिर०

———o———
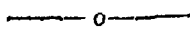
विरह की काफी ।

(३७) दई ये कैसी भई—अब सूझत नांहि उपाय ।
खान पान की सुध ना तनकों जियरा अति अकुलाय॥ दई०
पहले गुन सुन २ मोहन के रह्यो हियो ललचाय ।
जब तें दृष्टि परी वा ऊपर गयो चित्त बौराय ॥ दई०
बांहिर भीतर बौरी कहैं सब बैरी मोय लखाय ।
बेदरदी कोउ पीर न जानैं कासे कहूं समझाय ॥ दई०
ललित त्रिभंग मनोहर झांकी नैनन रही समाय ।
रोम रोम में घनश्याम छबीलो बैठ गयो तन आय ॥ दई०
जो मथुरेश दरस नहीं देंगे प्राण न सकूं रखाय ।
इत लाओ कोई बेग पिया को बिनवों हा हा खाय ॥ दई०

———०———

(युगल बिहारी विनय हमारी सुनों ज़रा अब तो प्राण प्यारे)

इस तर्ज़ पर

पद ।

(३८) सिवा हरी प्रेम के जहां में न कोई नेमत नज़र में आई ।
फ़िज़ूल खोया रतन ये नर तन अगर ये पूंजी नहीं कमाई ॥
कहां महाराज मानधाता कहां करण कुंभ जिसका भ्राता ।
निगलगई सबको पृथ्वी माता रही न कीरत न कुछ बड़ाई ॥
अमर हुये प्रेम भक्ति पाकर हज़ारों जन हरि शरनमें आकर ।
ध्रुरू से प्रह्लाद से चतुर नर विदुर वो भिलनी वो मीराबाई ॥

जिसे पड़ा प्रेम रस का चस्का रहा किसी के नहीं वो बसका।
रहा न भूखा सुजस कुजस का छका हिये प्रेम मस्ती छाई ॥
हरी को अपने अधीन करले जो प्रेम के रस को दिल में भरले।
दृगों में मथुरेश रूप धरले करै हरी उसकी सेवकाई ॥

---o---

पद । (राग केदारा)

(३९) सत चित आनंद रूप नाथ हैं हमारे ।
सबही को प्यार करत सबही के प्यारे ॥
वेद कहैं निराकार निर्गुण अज निर्विकार ।
सोही उर करुणाधार नाना वपु धारे ॥ सत०
जब २ है धर्म हान अरु अधम को उठान ।
तब २ साधुन के काज प्रगटत रखवारे ॥ सत०
एकहि तरु पंछी दो जीव ईश मित्र अहो ।
एक स्वाद चाखत है दूसरो निहारे ॥ सत०
बिछुरो चिरकाल मीत प्राप्त होय किये प्रीत ।
बाढ़ै छिन २ प्रतीत तब अन्तर टारे ॥ सत०
प्रेम के बस मथुरापति देत जनहिं उत्तम गति ।
प्रेमिन सों मिलन हेत बाट तकैं ठारे ॥ सत०

---o---

(ग़ज़ल)

(४०) दिल मेरा जिस पर फ़िदा है वो सितमगर और है ॥

ज़ख्म है जिसका रगे जां पर वो नश्तर और है ॥
गिर नहीं सकती किसी की बिजलियां दिल पर मेरे ।
सर मेरा जिससे क़लम होगा वो ख़ंजर और है ॥
झुक नहीं सकता किसी शाहेजहां के रोबरू ।
है फ़िदा ख़ाके क़दम दिलबर पै वो सर और है ॥
है न मेरा दिल मुसाफ़िरख़ाना गैरों के लिये ।
सैर गाहे यार जानो इसको ये घर और है ॥
राहैं सदहा है रसाई के लिये दिलदार तक ।
जिसमें जा वापिस नहीं आते हैं वो दर और है ॥
दौलते दुनिया वहां कुछ भी तो करामद नहीं ।
जिससे सौदा इश्क़ का मिलजाय वो ज़र और है ॥
कोशिशें कर मर मिटे लाखों अबस उलमायदीन ।
हर जगह हाज़िर हैं वो मथुरेश मनहर और है ॥
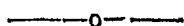
(श्री गंगाजी की स्तुति का पद)

(४१) जय तरन तारिनि अघ हारिनि गंगा माई ।
धन दया धारिनि सुख कारिनि गंगा माई ॥ १ ॥
तारे बेचारे सगर भूप के सुत साठ हज़ार ।
भागीरथ लाये तभी भागिरथी कहलाई ॥ २ ॥
दो०—नाम लिये श्री गंग को होत सकल अघ भंग ।
दरस परस कीने उठे उर हरि प्रेम तरंग ॥
शिव जटा राज के महिमा की करी अधिकाई ॥ जय ॥

दो०—जो घर से यात्री चलै करन गंग अस्नान।
पैंड़ पैंड़ हय मेध फल पावत निश्चय जान ॥
ब्रह्मादिक देवों ने यह कीरत मुख से गाई ॥ जय०
दो०—जन्म जन्म पातक हरै एक बिन्दू जलपान।
अस पतितन पावन करन नहीं देव कोउ आन ॥
प्यारी मथुरेश की गोलोक से भूपै धाई ॥ जय०

———o———

श्री गंगाजी की स्तुति का पद।

(४२) मात गंग दिव्य अंग ताप भंग कारिणी।
तोसि नाहिं कोई और करुणा दया धारिणी ॥
हत्यारे हू पापी तारे तूही संकट हारिणी।
अति बलि कलि बल सहज विदारणी ॥
भागीरथ रथ लागी मंद मद चारिणी।
शंभु शीस पै बिराजि विषय ताप हारिणी ॥
भव दुःख भंजिनी सब सौख्य कारिणी।
जगत तरन तारिणी मथुरा उद्धारणी ॥

———o———

प्रिया प्रियतम के चौसर खेल का पद

(४३) चौसर खेलत युगल बिहारी निज २ विजय चहत रंग भीने।
ललिता और विशाखा नागरि न्याय करन बैठीं दृगदीने ॥
श्याम वरण की नरदें श्यामा लई पीत मोहन छबि धामा।

पासे हस्तिदंत के खासे फेंकन कों प्यारी कर लीने ॥
अधर सुधारस ले जो जीते बदी वदन प्यारी जू पीते ।
खेलत पहर दोय जब बीते हारे हरि रस कला प्रवीने ॥
शरद रैन छाई उजियारी केलि कला दम्पति बिस्तारी ।
अधर सुधा प्रीतम की प्यारी लेत श्याम भये मदन अधीने ॥
देहु इनाम जीत की प्यारी ललिता हंस अस गिरा उचारी ।
मथुरा दम्पति छबिपै वारी तन मन धन न्योंछावर कीने ॥

तथा दूसरा पद

(४४) चौसर रुपी निकुंज में अति मन की भावनी ।
सखियां निहारें चाव से झांकी सुहावनी ॥
बरसे सुधा वो चंद्र बदन श्यामा श्याम से ।
दम्पति की छबि है चंद्रप्रभा की लजावनी ॥
चाहैं जो दाव भामिनी पासा वुही पड़े ।
चतुराई लालजी की न कुछ काम आवनी ॥
जो हार सोही चेरा कहावै सदैव को ।
बाजी लगी कठिन अति जन मन लुभावनी ॥
प्यारी की जीत पर कहें मथुरेश हंस के बैन ।
करतूत प्यारी जी की है सुध बुध भुलावनी ॥

श्री बड़े श्री जी के गोलोक पधारने के शोक में

(लावनी)

(४३) गो लोक पधारे माधवसिंह सवाई ।

जय नगर माँहि अति शोक उदासी छाई ॥
सब प्रजा विकल भई शोकसिंधु लहरायो ।
नहि कोऊ जेहि दृग नीर न रोय बहायो ॥
अस भासत जिम सब निज सर्वस्व गमायो ।
अति मंदभाग यह दिवस दृष्टि में आयो ॥
धिक विधना हाय तिहारी मति बौराई ।
गो लोक पधारे माधवसिंह सवाई ॥
ड्योढी महलात सबहि सूने से लागे ।
सुख संपत भाग सुहाग प्रजा के भागे ॥
पशु पक्षिन मान्यो शोक अन्न जल त्यागे ।
नर नारि सकल मिल रोवत परम अभागे ॥
अन्दाता कैसी दीर्घ समाध लगाई ॥ गोलोक०

भारत में ऐसो कौन धर्म रखवारो ।
जिह तन मन धन इक धर्महि ऊपर वारो ॥
आचार सनातन डूबत निपट उबारो ।
तिहु लोक में जाके सुजस को बजत नगारो ॥
लन्दन में जाकी धर्म धुजा फहराई ॥ गोलोक०

हरिपौड़िन से जब हटी मात श्री गंगा ।
सन्तन मन लगी जो उठने प्रेम तरंगा ॥
नृप माधव राखी भयो सर्व दुःख भंगा ।
सब भारतवासी रीझे सुनत प्रसंगा ॥
माधवी गंग तबही से सो कहलाई ॥ गोलोक०

छप्पन की साल परो दुर्भिक्ष भयानक ।

राखे तब प्राण प्रजा के नाथ अचानक ॥
पुन योरप युद्ध की बेला राख्यो बानक ।
सुख पाय प्रजा वार्यो नृप पै मन मानक ॥
हर संकट में प्रभु कीनी परम सहाई ॥ गोलक०
रहे गवर्मैंट के ख़ैरख्वाह हितकारी ।
पाई कैसर से नाना पदवी भारी ॥
सब लार्ड तथा इंग्लैन्ड मुख्य अधिकारी ।
करतूत सराही माधवेन्द्र अवतारी ॥
भये शोक मग्न सम्राट हु सुनत जुदाई ॥ गोलोक०
लिये गोद मात श्रीमान मान जग छायो ।
सब हिन्द तथा इंग्लैन्ड ने मोद मनायो ॥
नहिं राजकुमार कोऊ अस जग में जायो ।
जाको सब जग में ऐसो बजो बधायो ॥
अस सुनिधि योग्य प्रभु पाय धीरता आई ॥ गोलोक०
गोपाललाल सुन लीजै विनय हमारी ।
तब लोक में माधव माधव रहैं सुखारी ॥
अरु मान महीपति सदा छत्र सिरधारी ।
सुख संपत से ये रहैं प्रजा हितकारी ॥
मथुरेश तिहारी इन पर कृपा सवाई ॥ गोलोक०

———o———

श्री हजूरसाहिब की राजगद्दी की लावनी ।

(४६) जय जयपुरेश श्रीमान मान महिपाला ।

छवि मोर मुकट धर तेज प्रताप विशाला ॥
१ विक्रम संवत उनइससौ अरु उन्यासी ।
आसौज कृष्णा द्वादशी तिथी शुभरासी ॥
धन राज गद्दी राजे महिमा परकासी ।
जय नगर प्रजा के चित्त की चिन्ता नासी ॥
पितु तुल्य करैंगे अवश प्रजा प्रतिपाला । जय जयपुरेश० ॥
२ ग्यारह बजते ही ठीक हजूर पधारे ।
जामा तन खूंटेदार पाग सिर धारे ॥
संग चेले और खवास भृत्यगण सारे ।
नीतिज्ञ सचिव प्रोहित जी अति कृतवारे ॥
बोले नक़ीब मृदुबोल बोल रहे बाला । जय जयपुरेश० ॥
३ दरबार सज्यो शुभघरि दिवान खाने में ।
क्या देर थी पंडितजनों के आजाने में ॥
सरदार लोग हाज़िर निज २ बाने में ।
कीत्वरा द्विजों ने सामग्री लाने में ।
भयो देवार्चन फिर राजतिलक तत्काला ॥ जय जयपुरेश० ॥
४ तोपोंने की आवाज़ें भई सलामी ।
लई दरबारियों की नज़र हरषयुक्त स्वामी ॥
महाराज होंयगे छत्रपतिन में नामी ।
गुणशील धर्म में माधव के अनुगामी ॥
कहे प्रजा होय प्रभु हिन्द नृपों में आला । जय जयपुरेश० ॥
५ की वृष्टि इन्द्र ने प्रात धरा धो डारी ।
ज्योनार भई हे डे की मोद अपारी ॥
हर ठौर मुन्तज़िम राजकाज अधिकारी ।